

कहानी (लघुकथा) लेखन

- कहानी लेखन एक कला है।
- अच्छे कलाकार दुर्लभ होते हैं।
- कहानी वास्तविक होनी चाहिए।
- यदि कहानी वास्तविक न हो, तो उसकी प्रस्तुति सजीव होनी चाहिए।
- कहानी प्रस्तुत करने का ढंग रोचक होना चाहिए।
- कहानी की भाषा सरल होनी चाहिए।
- कहानी में जिज्ञासातत्व रहना चाहिए।
- कहानी की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि कहानी का संदेश घटनाओं के द्वारा प्रकट हो, न कि लेखन के कथन के द्वारा।

कहानी के कुछ उदाहरण:-

(I)

राजू का बेटा रामचंद्र

राजू अपनी कुटिया के दरवाजे पर बैठा था। उसने देखा रामचंद्र धीरे-धीरे चला आ रहा है। राजू ने मजदूरी कर-कर के रामचंद्र को पढ़ाया था। आज वह नौकरी के लिए साक्षात्कार देने गया था। रामचंद्र ने राजू के पास आते ही उसके पैर छुए और कहा-“बापू! मुझे नौकरी मिल गई है। अब मैं मेहनत करूँगा और आप आराम करना।”

अगले दिन से रामचंद्र काम पर जाने लगा। अपनी मेहनत के बल पर रामचंद्र शीघ्रता से उन्नति करता चला गया। उन्नति करने के बाद भी वह अपने पिता की मेहनत को भूला नहीं, इसीलिए वह अपनी उन्नति का श्रेय अपने पिता को देता।

(II)

जाड़े (ठंड) के दिन

जाड़े के दिन हैं। सुमन सुबह सुबह उठती, घर के सारे काम करती। बच्चों को उठाकर स्कूल भेजती और पति को काम पर भेजती। सुमन का पति ऑटो-रिक्शा चलाता है। सुमन घर-घर जाकर झाड़ू-पोंछे और बर्तन का काम करती है।

जाड़े के दिनों में जब वह काम पर पहुँचती, उसकी मालकिनें उसी का इंतजार कर रही होती। रजाई में बैठकर भी उन्हें ठंड लग रही होती, पर सुमन ठंडे पानी से सारा काम करती। उसका स्वेटर भी पतला-सा है, जो काम करने में गीला हो जाता। भूखी-प्यासी वो बड़ी लगन से काम करती। घर आते-आते उसे चारबजजाते। घर आते ही वो बच्चों की सुध लेती। सुमन का पति भी ऑटो-रिक्शा चलाकर रात तक घर आता। दोनों पति-पत्नी इतनी मेहनत इसलिए कर रहे हैं कि उनके बच्चे पढ़ सकें और वो एक अच्छा जीवन जी सकें।

(III)

समाचार पत्र की आत्मकथा

मैं समाचार पत्र हूँ। तरह-तरह के समाचार मुझे हर रोज नया जीवन देते हैं। देश के समाचार, विदेश के समाचार, खेल के, व्यापार के, अपराध के, फिल्म के अर्थात् हर तरह के समाचार मुझ में समाए हैं। मेरी आयु चाहे कितनी ही क्यों न हो, फिर भी मैं युवा हूँ। क्योंकि पुराना मुझे पसंद नहीं, परिवर्तन को मैं सहर्ष स्वीकार करता हूँ और वर्तमान में जीता हूँ।

मैं संदेश देना चाहता हूँ- अगर सदा युवा रहना चाहते हो तो समय के साथ अपने आप को बदल लो, परिवर्तन को स्वीकार करो। पुरानी रूढ़ियाँ और परंपराएँ, जो हानिकारक हैं, उन्हें छोड़ दो। वर्तमान में जियो। जो बीत गया वह लौटकर आएगा नहीं, और जो आया नहीं उसका क्या सोचना। अगर वर्तमान अच्छा है, तो भूत और भविष्य अपने आप अच्छा होगा।

(IV)

में और गंगा माँ

मेरा और गंगा मासी का रिश्ता बहुत गहरा है। गंगा मासी मेरे लिए मासी नहीं, बल्कि माँही है। मैं और मेरा भाई जुड़वा पैदा हुए थे। जुड़वा बच्चों को पालना बहुत कठिन है। एक रोता तो दूसरा भी रोता। कह सकते हैं जो एक बच्चा करता वही दूसरा बच्चा भी करता। दो छोटे बच्चे पालने के कारण माँ की सेहत प्रभावित होने लगी। इस कठिन समय में गंगा मासी ने मेरी देखभाल शुरू कर दी। माँ भाई की देखभाल करती।

गंगा मासी ने मुझे पालपोस कर बड़ा किया था। मासी ने मेरी हर इच्छा को पूरा किया। बड़ी हो जाने के बाद भी गंगा मासी के साथ मेरा लगाव कम नहीं हुआ। अब गंगा मासी का विवाह हो चुका है। उसके दो बच्चे भी हैं, पर गंगा मासी अपने बच्चों से पहले मुझे अपना समझती है। मेरे लिए गंगा मासी मासी नहीं, गंगा माँ है।

(V)

कोरोना काल और मैं

कोरोना महामारी फैलने के कारण देश में बाहर निकलने पर प्रतिबंध लगा दिया गया। परिणामस्वरूप स्कूल भी बंद हो गए। आरंभ में तो उत्सुकतावश बहुत अच्छा लगा। पर धीरे-धीरे समय बीतने पर निराशा होने लगी, क्योंकि सब गतिविधियाँ रुकी हुई थीं। न बाहर जा पाना, न मित्रों से मिलना, न बाजार, न माल, न पिक्चर, न ही खाना-पीना, सब कुछ तो बंद था। तो निराशा होनी तो स्वाभाविक थी।

पर फिर सोचा कि ऐसे नहीं चलेगा। अतः सोच समझ कर एक दिनचर्या बनाई, जिसमें प्रातःकाल उठकर छत पर व्यायाम करना, थोड़ी बागवानी करना, घर के कुछ कामों में हाथ बँटाना, दोपहर में स्वयं अपनी पढ़ाई करना, सायंकाल के समय कुछ अच्छी पुस्तकें पढ़ना। समय कैसे बीतने लगा, पता ही न चला। अब जब स्कूल इत्यादि खुलने लगे हैं, मैं सभी गतिविधियाँ अवश्य जारी रखूँगा।
